

नज़र | By Payal Agarwal

तेरी नज़रो से नज़र को मिलाया
जी कहे देखता रहूँ
तू है इस कलयुग का राजा तू ही शीश का दानी
मन कहता है श्याम तेरे नैनो पे लिखू कहानी
तेरे बाद ना कोई कभी मुझको भाया
जी कहे देखता रहूँ

तेरी मैं सुंदरता बयां करूँ कैसे
गगन में जैसे चंदा है लगते हो वैसे
छवि तेरी देख ले जो तेरा हो जाये
तेरे प्रेम के सागर में वो तो खो जाए
कितना प्यारा कितना अच्छा
तेरा दर है कितना सच्चा
सुना है तीनो लोको में ना है तेरा कोई सानी
मन कहता है श्याम तेरे नैनो पे लिखू कहानी
तेरी माया कोई जान न पाया
जी कहे देखता रहूँ

कहाँ से मैं शुरू करूँ समझ नहीं आये
लिखने को तारीफ़ तेरी शब्द ना मिल पाए
जब देखूँ एक अलग सा रंग ही मिलता है
जैसे इतने फूलों में कमल अलग ही खिलता है
खुशबू ऐसी जो मन भाये तुमसा दूजा नज़र ना आये
प्रेम में तेरे कभी कभी तो बहता आँख से पानी
मन कहता है श्याम तेरे नैनो पे लिखू कहानी
तेरी माया कोई जान न पाया
जी कहे देखता रहूँ

आते ही तेरे दर पे धीरज मिलता है
हर दिल का मुरझाया उपवन खिलता है
भरके नज़र जो देखे हो जाए दीवाना
मुश्किल है तुमपे कोई लिखना अफसाना
क्या क्या लिखू समझ ना आये
देख के तू मुझे मुस्काये
हो ना सके जो करने चला हूँ मैं पागल नादानी
मन कहता है श्याम तेरे नैनो पे लिखू कहानी
अब कहीं जाके मुझको समझ में है आया
जी कहे देखता रहूँ